ISSN 2349 : 4557

International Peer-Reviewed Referred Journal

SURABHI

Impact Factor : 2.8

Volume-2

32nd Issue

November 2019

Editor
Mr. Rohit Parmar

AYUDH PUBLICATION
Publication of Books with ISBN
AYUDH JOURNAL(2321:2160)
SURABHI JOURNAL (2349:4557)
Contact
94 28 34 36 35 & 91069 42482
ayudh2013@gmail.com
www.ayudhpublication.com

ISSN 2349-4557

Editor
Mr. Rohit Parmar
ayudh2013@gmail.com
www.ayudhpublication.com

Scanned with AnyScanner

ISSN : 2349-4557

SURABHI

International Peer-Reviewed Refereed Journal

32nd Issue   Vol-2   November-2019

Editor in Chief:
Mr. Rohit Parmar

Advisory Board

- Prof. H. N. Vaghela (Former Acting V. C.)
  Professor & Head,
  Department of Hindi,
  M. K. Bhavnagar University, Bhavnagar,
  Gujarat, India
- Prof. (Dr.) Chetan Trivedi
  Vice Chancellor
  Bhakta Kavi Narsinh Mehta University,
  Junagadh, Gujarat, India
- Dr. R. P. Bhatt
  Principal,
  Bahauddin Govt. Science College,Junagadh,
  Gujarat, India
- Prof. Jaydipsinh K. Dodiya
  Professor & Head,
  Department of English & CLS,
  Saurashtra University, Rajkot, Gujarat
  India
- Dr. Martina R. Noronha
  Principal,
  Sir K. P. College of Commerce, Surat
  Gujarat, India

Editorial Board

- Dr. Jiten J. Parmar (GES-II)
  Assi. Professor,
  Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh,
  Gujarat, India
- Mr. Dilip B. Kataliya (GES-II)
  Assi. Professor,
  Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh,
  Gujarat, India
- Dr. Arjun G. Dave
  Founder & Owner
  Vedant Educational Services, Rajkot
  Gujarat, India
- Dr. Pravat Dangal
  Associate Professor,
  St. Joseph's College, Darjeeling,
  West Bengal, India
- Dr. Dnyaneshwar L. Sonawane
  Assi. Professor,
  Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya,
  Ambajogai, Dist. Beed, Maharashtra, India

Scanned with AnyScanner

70. Study of the Communication Skills among the Commerce Students
Kishankumar Mukeshbhai Brahmbhatt....278
71. A Study on the Issues of Inter-State Migrant Labourers in Ginning and Pressing Factories in Mehsana District of the Gujarat State
MITALBAHEN MUKESHKUMAR SHAH....283
72. માની તપસ્યા
શ્રીમતિ ભારતીબેન રૈયાભાઈ વાઘેલા....294
73. मराठी तथा हिंदी दलित कविता : तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. प्रदीप रेवाप्पा सरवदे....298
74. ભારતમાં બેંકિંગ ક્ષેત્રે NPAના કારણો અને અસરો
અંજના ધરમશીભાઈ પાટડિયા....302
75. સમાજ જીવનમાં અંધશ્રદ્ધા
પ્રા.ડૉ.વિષ્ણુ આર. વણકર....307
76. ધોરણ ૮ના સામાજિક વિજ્ઞાન વિષયમાં જ્ઞાનકુંજ પ્રોજેક્ટ દ્વારા શિક્ષણ અને સામાન્ય વર્ગ શિક્ષણમાં વિદ્યાર્થીઓની શૈક્ષણિક સિદ્ધિનો તુલનાત્મક અભ્યાસ
ભાવનાબેન જે. ભોજાણી....309
77. મહાગુજરાત આંદોલન
રૂપા કાનુદાન ગઢવી....313
78. Emerging Issue in Education Development: A Study on Importance of Animation
Rupal D. Patel....315
79. Stress and Its Association with Health and Well Being
Dr. Jatin P. Bhal....321
80. Right to Education Act: A Critical Analysis
Dr. Afsana A. Sama....330
81. સાહિત્યિક સંશોધનનું કાર્ય
નરેશભાઈ બી. ભુરીયા....333
82. ગુજરાતમાં ખેતી
આરતી જે. શીશાંગીયા....335
83. પશુપાલન કરતી મહિલાઓનો સામાજિક–આર્થિક અભ્યાસ : ખાંભલા ગામના સંદર્ભમાં
જીજ્ઞેશાબહેન એમ. ગામીત....339
84. સૌરાષ્ટ્રમાં સૂક્ષ્મ સિંચાઈ પદ્ધતિનો એક અભ્યાસ
રતાભાઈ રવજીભાઈ રોજાસરા....344
85. Shashi Tharoor's Art of Characterization in *Riot*: A study in reference to Reflection of Indianness
Dr. Bhavesh D. Parmar....349
86. A study of analysis of Gujarat Budget of 2019-20
Dr. Dineshkumar R. Chavda....351
87. A COMPARATIVE STUDY OF MENTAL HEALTH AMONG MOBILE ADDICTED COLLEGIAN BOYS AND GIRLS
Dr. Haresh D. Vaghamshi....357

Scanned with AnyScanner

मराठी तथा हिंदी दलित कविता : तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. प्रदीप रेवाप्पा सरवदे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,
बारामती, ता. बारामती, जि. पुणे

भारतीय साहित्य को समृध्द बनाने में भारत की विभिन्न भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। इन भाषाओं के साहित्य का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि इसमें साठोत्तर काल के साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस काल में साहित्य की विभिन्न धाराएँ जैसे – स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श को केंद्र में रखकर साहित्यधाराएँ प्रवाहित हुई। इनमें 'दलित साहित्य' नामक स्वतंत्र विचारधारा का उदय हुआ। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दलित साहित्य पर अनेक विचार विमर्श, चर्चाएँ हुई। लेकिन आज दलित साहित्य ने भारतीय साहित्य में ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य में भी अपना अस्तित्व सिद्ध किया हुआ है। अतः दलित साहित्य का महत्व स्वयं सिद्ध है। यह दलित साहित्य भारत की सभी भाषाओं में जैसे – मराठी, हिंदी, तेलगु, कन्नड, गुजराती, पंजाबी, बंगला, उड़िया आदि भाषाओं में विकसित हुआ है और हो रहा है।

भारतीय साहित्य में दलित साहित्य का जन्म सर्व प्रथम मराठी साहित्य में हुआ है, जिसके प्रभाव स्वरूप हिंदी में भी इस साहित्य का स्वतंत्र साहित्यधारा के रूप में उदय हुआ। 20 वीं शती के अंतिम चार दशकों से मराठी साहित्य में 'दलित साहित्य' नामक ऐसा आंदोलन शुरू हुआ, जिसने भारतीय साहित्य को झकझोर दिया। इस दलित साहित्य का मूल प्रेरणास्त्रोत फुले–शाहू–आंबेडकर की विचारधारा है। इन युगपुरूषों ने भारत में पनप रही धर्माधिष्ठित वर्ण और वर्ग व्यवस्था को ध्वंस कर स्वतंत्रता, समता तथा बंधुता पर आधारित समाज निर्माण करने का महान प्रयास किया। समाज की बहुसंख्य जनता जो शूद्र तथा अतिशूद्र के नाम पर हजारों वर्षों से पशु से भी गई गुजरी जिंदगी जी रहे थे, उन्हें जाति व्यवस्था की दल दल से बाहर निकालने का महत्वपूर्ण कार्य इन्हीं युगपुरूषों ने किया। इसी कारण इनकी विचारधारा ही दलित साहित्य की नींव बनी है।

20 वीं शती के अंतिम चार दशकों में भारतीय समाज व्यवस्था के विरूध्द, जातियता, अस्पृश्यता को लेकर जो क्रांतिकारी स्वर साहित्य में दिखाई देने लगे उसे 'दलित साहित्य' के नाम से संबोधित किया जाने लगा। इस दलित साहित्य में हजारों वर्षों से दलितों पर किए गए अन्याय, अत्याचार, शोषण आदि के कारण उनके मन में दमित हुई भावनाओं के विस्फोट ने कविता का रूप धारण किया। इसी दमित भावनाएँ, क्रोध, विद्रोह से भरी हुई दलित कविताओं ने भारतीय भाषाओं में अपनी अलग पहचान बनाई है।

महाराष्ट्र में डॉ. बाबासाहब आंबेड़कर के विचारों से प्रेरणा ग्रहण कर सर्व प्रथम मराठी दलित साहित्यकारों का उदय हुआ, जिनमें नामदेव ढसाळ, यशवंत मनोहर, अरूण कांबले, बाबुराव बागुल, प्रज्ञा लोखंडे, आत्माराम राठोड, दया पवार, अर्जुन डांगळे आदि प्रमुख कवि हैं। इन कवियों ने मराठी दलित कविता को समृध्द बनाया। उन्होंने अपने अनुभवों को, अपने समाज के लोगों की व्यथा, पीड़ा, दुःख, दर्द को ही अपने काव्य का मुख्य विषय बनाया। अपने सुख–दुःखों को कविताओं के माध्यम से जीवित रूप देकर सजीव बनाया। परिणामस्वरूप सामाजिक अन्याय से पीड़ित दलितों की समस्याओं को नया रूप दिया। यही मराठी दलित साहित्य का असर समस्त भारतीय दलित साहित्य तथा साहित्यकारों पर हुआ।

मराठी दलित साहित्यकारों से प्रेरित हिंदी भाषी प्रांतों में भी हिंदी दलित कविता लिखने की प्रक्रिया शुरू हुई। इन कवियों में ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौहान, सुशीला टाकभौरे, कंवल भारती, दयानंद बटोही, बुध्दशरण हंस, डॉ. कुसुम वियोगी, श्यौराज सिंह 'बेचैन', डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी, सत्यप्रकाश, प्रल्हादचंद्र दास आदि कवियों ने आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रेरित होकर दलित साहित्य का निर्माण किया। इन कवियों ने विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी कविताओं में वंचित, पीड़ित, शोषित वर्ग की समस्याओं का चित्रण कर उसके विरुद्ध आवाज उठाई। उनके मन में सुलग रही विद्रोह की ज्वाला को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया।

Scanned with AnyScanner

सन् 1960 के पूर्व भी महाराष्ट्र में दलित कवि दिखाई देते हैं, उनमें वामन दादा कर्डक, दीनबंधु शाहीर हेगडे, किसन बनसोडे आदि कवियों ने दलित कविताएँ लिखी। लेकिन महाराष्ट्र में दलित साहित्य का सही आविष्कार नामदेव ढसाळ की कविताओं से ही दृष्टिगत होता है। 60 वें दशक में नामदेव ढसाळ का कवितासंग्रह 'गोलपीठा' प्रसिध्द हुआ, जिसे मराठी साहित्यकारों ने साहित्य मानने से ही इंकार किया। उनकी कविताओं में दलित संस्कृति का हू–ब–हू चित्रण किया है। दलितों की इच्छाएँ, आचार–विचार, सुख–दुःख, पीड़ा, व्यथा, जीना–मरना, सामाजिक विषमता आदि विषयों पर कविताएँ रची गई हैं। यही सारी समस्याएँ हिंदी भाषी प्रांत के दलितों में भी दिखाई देती हैं। इसीलिए हिंदी के दलित साहित्यकारों ने भी इन्हीं समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बनाया है।

दलित समाज की वेदनाओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति देने में मराठी और हिंदी दलित कविताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन कवियों ने भारतीय समाज व्यवस्था में प्रचलित सामाजिक रूढ़ी, परंपराएँ, विषमता, वर्णव्यवस्था का जमकर विरोध किया है। इसमें मराठी के दलित कवियों में नामदेव ढसाळ का नाम सर्वप्रथम आता है। दया पवार, अरूण कांबले, बाबुराव बागुल, प्रज्ञा लोखंडे, ज. वी. पवार आदि मराठी के कवियों ने सामाजिक कुरीतियों पर कड़ा प्रहार किया। हिंदी के दलित कवियों में भी विद्रोह करने वालों में डॉ. जयप्रकाश कर्दम, सत्यप्रकाश, ओमप्रकाश वाल्मीकि, कुसुम वियोगी, सूरजपाल चौहान डॉ. पुरूषोत्तम सत्यवीर, श्यौराजसिंह 'बेचैन' आदि हैं। डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी का काव्यसंग्रह 'गूंगा नहीं था मैं' कवितासंग्रह में इस विषय से संबंधित अनेक कविताएँ मिलती हैं, जिनमें सामाजिक, राजनीतिक परंपरा का जोरदार खंडन किया है। इनकी 'किले' नामक कविता में सामाजिक विषमता का विरोध करते हुए कवि कहता है – "ध्वस्त कर दूँ इन किलों को/ चिन्दी चिन्दी कर दूँ इनका वजूद/ कि शांत हो जाए/ मेरी अंतर में धधकती हुई/ अपमान की आग और मिल जाए/मेरे मन को शकून, लेकिन/नहीं जाने देती मुझे वहाँ तक/मेरी चेतना"[1] 'दमन की दहलीज पर' कविता में मजदूरों की समस्या तथा सरकार से मिले जमीन की पट्टी पर मालिकाना कब्जे का विरोध किया है। जातिवाद का विरोध करते हुए कहते हैं –"तमाम विरोधों और दबावों के बावजूद/ जाति के जंगल का यह जीव/ अपनी मुक्ति के लिए अड़ा है/ अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए लड़ा है।"[2] इन सामाजिक रूढ़ी परंपराओं को त्यागकर नए समाज का निर्माण करने के लिए ये कवि सदा प्रयत्नशील रहें। उन्हें आशा है कि इस जातिवादी भारतीय समाज व्यवस्था में परिवर्तन होकर दलितों को सम्मान भरा जीवन मिलेगा। मराठी के कवि नामदेव ढसाळ जी ने जातिवादी समाजव्यवस्था को नष्ट करने का बीड़ा उठाया है। वे कहते हैं –"रक्तात पेटलेल्या अगणित सूर्यानों/ किती दिवस सोसायची ही घोर नाकेबंदी?/मरेपर्यंत राह्याचे का असेच युध्दकैदी?/ ती पहा रे ती पहा, मातीची अस्मिता आभाळभर झालीय/ माझ्याही आत्म्याने झिंदाबादची गर्जना केलीय/ रक्तात पेटलेल्या सूर्यानों/ आता या शहरा शहराला आग लावीत चला।"[3] यहाँ पर कवि नामदेव ढसाळ जी अपनी अस्मिता को आकाश में फैलाना चाहते हैं। धर्म संस्कृति से निर्मित बड़े नगरों को शहरों को आग लगाकर ध्वस्त करके नए समाज का निर्माण करना चाहते हैं। इस प्रकार इन दोनों कवियों के विचारों में समानता दिखाई देती है। दोनों भी भारतीय समाज की बुरी संस्कृति का नाश चाहता है।

भारतीय समाज व्यवस्था में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था को बनाये रखने में हिंदू ग्रंथों की अहम् भूमिका है। ये लोग उन्हीं ग्रंथों को पवित्र मानते हैं। इन ग्रंथों को तथा उन जातियवादियों को गालियाँ देते हुए मराठी के क्रांतिकारी कवि नामदेव ढसाळ कहते हैं –"मी तुला शिव्या देतो, तुझ्या ग्रंथाला शिव्या देतो, तुझ्या संस्कृतीला शिव्या देतो, तुझ्या पाखंडी पणाला शिव्या देतो/ मी हे सारे काहीं बोलनार नव्हतो, पण माझे हाथ जागे झालेत।"[4] सामाजिक कुकृत्यों को देखकर कवि के मन में क्रोध उभरा हुआ है। इस जातिय व्यवस्था को बनाये रखनेवाले इन ग्रंथों की घिनौनी हरकतों का पता चलता है। इसीलिए वे उसे गालियाँ देते हैं। हिंदी के दलित कवि डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिंदू जातिवादी ग्रंथों को गालियाँ नहीं देते। वे तो इन्हें जलाकर राख करना चाहते हैं। इनकी कविता 'धर्म ग्रंथों को आग लगानी होगी' कविता में वे कहते हैं –"जब तक स्मृतियाँ रहेंगी/ रामायण, गीता और वेद रहेंगे/ तब तक वर्ण शुचिता रहेगी/ अस्पृश्यता रहेगी, जातिवाद रहेगा, समाज में विघटन और विद्वेष रहेगा/ समाज को प्रगतिशील बनाना है/ जाति के जहर को मिटाना है/तो इन तथाकथित धर्मग्रंथों को आग लगानी होगी।"[5]

इन दोनों कवियों के विचारों में मूल रूप से विद्रोह की भाषा है, लेकिन हिंदी के दलित कवि डॉ. कर्दम जी के विचारों की गति तेज और क्रोधित बनकर ज्वाला का रूप धारण करती है। जबकि नामदेव

Scanned with AnyScanner

ढसाळ जी के विचार सवर्णों को गालियाँ देकर चेतावनी ही देते रहते हैं। दोनों कवियों ने खुलकर धर्मग्रंथों की निंदा की है।

वर्णव्यवस्था ही मूलतः जातिवाद की जड़ है। इसलिए वर्णव्यवस्था को धिक्कारना ही दलित कविता का मूल उद्देश्य है। हिंदू धर्म ग्रंथों में लिखित परंपरावाद, ईश्वरवाद, अस्पृश्यता, जातियता, वर्णव्यवस्था आदि का विरोध करके सामाजिक सुधार करने का कार्य दलित कवियों ने किया है। मराठी के दलित कवि यशवंत मनोहर परंपरावादी और भाग्य पर निषेध का हल चलाकर उसे समूल नाश करना चाहते हैं। वे कहते हैं –"त्या हरामखोर परंपरावर मी विध्वसांचा नांगर धरतो/ ते सर्व दैववादी माझे वैरी आहेत/ ज्यांनी अस्पृश्यता अभंग केली तिची मधुर ओवी केली/ ते शब्द प्रमाण्यवादी सगुण वैरी आहेत, माझे ज्यांनी मला आजवर मुक्त होऊ दिले नाही।"[6] कवि यशवंत मनोहर जातिवाद से मुक्ति चाहते हैं। इसके लिए विद्रोह की आग को भड़काना जरूरी समझते है। हिंदू धर्मियों ने पाप–पुण्य तथा देवी–देवताओं के प्रकोप का डर निर्माण कर दलितों का सदियों से शोषण किया, उनको सामाजिक सुविधाओं से वंचित रखा। लेकिन आज दलित इस ढोंगी ईश्वरवाद को नकारता है। हिंदी के दलित कवि एन. आर. सागर अपनी 'ईश्वर' नामक कविता में कहते हैं –"मैं नकारता हूँ ऐसे ईश्वर को, अस्तित्व को, उसकी सत्ता–प्रभुता अमरत्व को, उसके वर्चस्व को, सर्वस्व को, क्योंकि संसार का सृजन नहीं विकास हुआ है।"[7]

इन दोनों कवियों के विचारों की तुलना की जाए तो दोनों के विचारों में बहुत बड़ा अंतर दिखाई देता है। यशवंत मनोहर कहते हैं कि आग लगा दो उन जातिवादी जल्लादों को और ईश्वरवाद पर विद्रोह रूपी हल चलाकर इसे नाश करने की सलाह देते हैं। परंतु हिंदी के कवि सागर सिर्फ ईश्वरवाद को नकारते हैं। इनके विचारों में विद्रोह नहीं उभरता जबकि यशवंत मनोहर जी विद्रोह से ही काम लेने को कहते हैं।

दलितों का तथा दलित कविता का विद्रोह मानवों से नहीं है, बल्कि मानव निर्मित जातिव्यवस्था से है। इस समाज व्यवस्था में हिंदू धर्म में जाति की ठेकेदारी है। इन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक बंधनों में दलितों को जखड़कर रखने का प्रयास किया। इन बंधनों से मुक्ति पाने के लिए तथा हिंदू धर्म और सामाजिक असमानता को दिखाने के लिए हिंदी के कवि डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी ने 'मूक माठी मुखरता' नामक कवितासंग्रह में अनेक कविताएँ में अनेक कविताएँ लिखी है। 'अलगाव की चोट' कविता में धार्मिक और सामाजिक बंधनों का खुलकर खंड़न किया है। वे कहते हैं – "तुम्हारी इसी सत्ता व्यवस्थाने/ सार्वजनिक कुओं, तालाबों से पानी लाने/ सड़कों पर चलने/ अपनी पसंद के कपड़े और जेवर पहिनने/ खाना खाने/ स्कूलों में पढ़ने/ गाँव बस्ती में घर बनाकर रहने का अधिकार छीनकर/ इसको छुओ मत, इसके साथ खाओ मत/ और इसके साथ विवाह मत करो की/ वर्जनाओं प्रतिबंधों की काल कोठरी में/ कैद किया और अस्पृश्य बना दिया मुझे।"[8]

हिंदू धर्मव्यवस्था में प्रचलित जाति प्रथा का नाश करने के लिए तथा बड़े धैर्य के साथ असमानता का विरोध करने की प्रेरणा कवि डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी ने 'इन्सानियत के फूल' कविता में देते हुए कहते हैं –"असमानता, अन्याय की कहानी/ जाति–वर्ण के अगुवा आदमी की/ छाती चीर कर ही/ खत्म की जा सकती है।"[9] मराठी के दलित कवि दया पवार भी 'तुम्ही प्रकाशाचे पुंजके व्हा' कविता में दलितों को प्रेरणा देते हैं, उन्हें आव्हान करते हैं –"आता तुम्हीच प्रकाशाचे पुंजक व्हा/ अन क्रांतिचा जयजयकार करा।"[10] यहाँ पर कवि दया पवार उन सारे बुरे गुणों को नष्ट करने के लिए प्रवृत्त हैं, जो अन्यायपूर्ण, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, धार्मिक कर्मकांड, सामाजिक और धार्मिक विषमता आदि हीन विषयों को संपूर्ण रूप से नाश करना चाहते हैं।

इन दोनों कवियों के विचार एक से हैं। दोनों कवियों ने एक–सी भावनाएँ व्यक्त करते हुए समाज को सुधारना चाहते हैं। लेकिन डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी के विचारों से भी दया पवार की कविताओं में क्रांतिकारी भावना की चिंगारी भड़क उठी हैं, सत्यप्रेमी जी ने थोड़ी नरमी से काम लिया है।

निष्कर्ष :–

हिंदी तथा मराठी के दलित कवियों ने सामाजिक चेतना की दृष्टि से अपने–अपने विचार कविताओं में व्यक्त किए हैं। दोनों भाषा के कवियों का समाज एक–सा है। शोषण भी समान, पीड़ाएँ और सामाजिक अपमान भी एक–से होने के कारण अन्याय के विरोध में खौल उठनेवाली मन की वेदनाएँ भी एक जैसी उभरी है। इसलिए दोनों भाषा के कवियों ने साभाजिक बुराईयों का खंडण किया है। दोनों भाषा के कवि सामाजिक परिवर्तन चाहते हैं और सम्मान का जीवन जीने के लिए आशावादी बने हैं। इनकी

Scanned with AnyScanner

रचनाओं में विषमता के भाव नहीं दिखाई देते। इससे यह स्पष्ट है कि समस्त दलित कवियों की भावनाएँ एक–सी हैं, चाहे वह किसी भी भाषा का हो।

संदर्भ ग्रंथ :–

1) किले (गूंगा नहीं था मैं) – डॉ. जयप्रकाश कर्दम, सागर प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2006, पृ. 12
2) दमन की दहलीज पर (गूंगा नहीं था मैं) – डॉ. जयप्रकाश कर्दम, सागर प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2006, पृ. 35
3) रक्तात पेटलेल्या अगणित सूर्यांनो (गोलपीठा) – नामदेव ढसाळ, तिलकंठ प्रकाशन, पुणे, संस्करण, 1975, पृ. 31
4) बेंबीचा देठ ओला होणा–या वयात (गोलपीठा) – नामदेव ढसाळ, तिलकंठ प्रकाशन, पुणे, संस्करण, 1975, पृ. 29
5) गूंगा नहीं था मैं – डॉ. जयप्रकाश कर्दम, सागर प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2006, पृ. 67
6) उत्थान गुंफा – यशवंत मनोहर, कौटेंनेटल प्रकाशन, संस्करण, 1980, पृ. 15
7) आजाद हैं हम – एन. आर. सागर, संगीता प्रकाशन, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली–32, संस्करण, 1996, पृ. 18
8) मूक माटी की मुखरता – डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी, आतिश प्रकाशन, दिल्ली–64, संस्करण, 1994, पृ. 12
9) मूक माटी की मुखरता – डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी, आतिश प्रकाशन, दिल्ली–64, संस्करण, 1994, पृ. 20
10) कोंडवाडा – दया पवार, मागोवा प्रकाशन, पुणे, प्रथम संस्करण, 1974 पृ. 06

डॉ. प्रदीप रेवाप्पा सरवदे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,
बारामती, ता. बारामती, जि. पुणे

Scanned with AnyScanner